>

Title: Need to erect a memorial in Hardoi district, Uttar Pradesh in honour of Madari Passi, hero of the peasant struggle and social reformer.

श्री अशोक कुमार रावत (मिसरिख): सामाजिक क्रांति के अमर सेनानी जननायक मदारी पासी सामंत जमींदार या साधन संपन्न व्यक्ति नहीं थे। वह दलित वर्ग के पासी समाज के एक साधारण किसान के पुत्र थे। उनका जन्म उ0प्र0 राज्य के हरदोई, जिला की सण्डीला तहसील के ग्राम मोहन खेड़ा में वर्ष 1860 में हुआ था। उन्होंने मनुवादी असमानतापूर्ण वर्ण व्यवस्था को सहते हुए अवध के संपूर्ण किसानों और मजदूरों की अस्मिता की समस्या के समाधान हेतु एका आंदोलन का नेतृत्व किया और समाज को सही दिशा देकर मानव जीवन में सत्य और अहिंसा का प्रचार प्रसार किया।

मदारी गांव के शूद्र समाज की दयनीय दशा से चिंतित और दुखी थे। मनुवादी अन्यायपूर्ण सामाजिक वर्ण व्यवस्था के कारण उन्हें अछूत माना जाता था। उन्हें दूना ही नहीं देखना भी पाप माना जाता था तथा उन्हें अनेक घृणात्मक नामों से पुकारा जाता था। उन पर श्अनेक प्रतिबंध लगाये गए थे। वह सार्वजनिक तालाब के पास नहीं जा सकते थे और मंदिरों में भी प्रवेश नहीं कर सकते थे। दलित समाज का हर व्यक्त् गांव के साहूकारों के कर्ज में डूबा हुआ था। उसकी दयनीय दशा का मुख्य कारण धार्मिक कर्मकांड, फिजूलखर्ची और नशीली वस्तुओं का अधिकाधिक सेवन था। उनकी अज्ञानता, अंधविश्वास और शिक्षा की कमी भी उनकी निर्धनता को बढ़ाती थी।

मदारी पासी समाज की पंचायतों में नशा न करने, आमदनी से अधिक खर्च न करने और कर्ज न लेने की सलाह देते थे और उसकी बुराइयों को भी प्यार से समझाते थे। वह जुआं न खेलने और व्यभिचार से बचने की भी सलाह देते थे। वह जन्म-मरण और शादी-विवाह के भोज जिसमें मांस और शराब जरूरी होती थी, को फिजूल का खर्च बताते और उसे बंद करने हेतु प्रोत्साहित किया करते थे। मदारी समाज के कमजोर और निर्बल वर्ग के कल्याण हेतु सदैव निष्ठा और समर्पित भावना से सहयोग करने में रूचि रखते थे। सामाजिक कार्यों से मदारी की गरिमा समाज में बढ़ी। मदारी ने अपने क्रांतिकारी सामाजिक कार्यों से समाज में बहुत ख्याति अर्जित की। उनके महत्व और ख्याति से प्रभावित होकर कांग्रेस के स्थानीय नेता उनको अपनी विशेष बैठकों में आमंत्रित किया करते थे। वह अपने विश्वसनीय साथियों के साथ इन बैठकों में सम्मिलित हुआ करते थे। इन बैठकों में अंग्रेजी शासन की जन विरोधी नीतियों की तीव्र आलोचना की जाती थी और उन्हें विदेशी बताकर उनका विरोध करने को प्रोत्साहित किया जाता था। आज सामाजिक विकास और मानव कल्याण हेतु उनके आदर्शमय संदशों और क्रांतिकारी विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार की अति आवश्यकता है।

अतः मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि वह मदारी पासी, जिन्होंने दलित और शोषित समाज में साहस,स्वाभिमान, स्वावलंबन, सहअस्तित्व की सुरक्षा के प्रति ललक और जागरूकता पैदा की और साधारण जनता में भाइचारा, देश भक्ति, कर्तव्यनिष्ठा और मानव कल्याणकारी भावना को बढ़ाने का साहसपूर्ण कार्य किया, उनकी स्मृति में उ0प्र0 राज्य के हरदोई तहसील सण्डीला के पहाड़पुर अटरिया में उनका भव्य स्मारक बनाकर निकटवर्ती क्षेत्र के केंद्रीय स्तर पर तीव्र विकास किए जाने हेतु आवश्यक कदम उठाए।